यहूदी धर्म, ईसाई धर्म, इस्लाम, धर्मनिरपेक्ष, हिन्दू धर्म

वह दिन दूर नहीं जब या तो आपके पास, या फिर आपकी संतानों के पास, वह जमीन भी न होगी जिस पर आप चल सकें

खण्ड 1

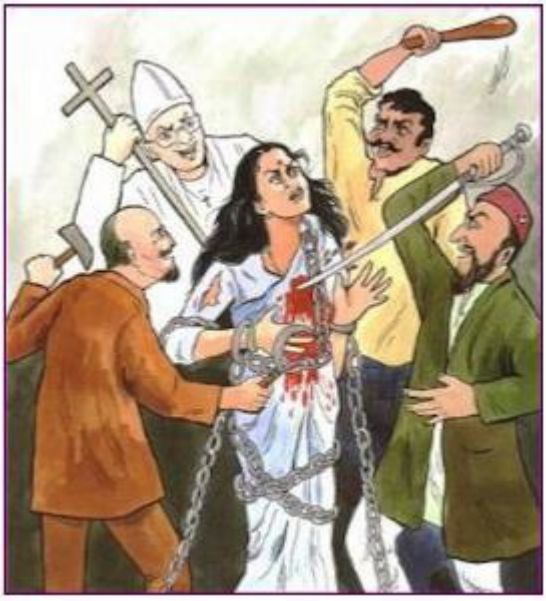

यशोधर्मन

(मानोज रखित)

© मानोज रखित 2006-07

प्रकाशक
मानोज रखित
8-604 डिस्कवरी, दत्तपाड़ा मार्ग, बोरीवली पूर्व, मुम्बई 400066 फोन 098698-09012
ईमेल maanojrakhit@yahoo.com
वेब साइट www.yashodharman.org

ISBN-13 978-81-89746-**61**-2
ISBN-10 81-89746-61-8

संस्करण
चतुर्थ संशोधित संस्करण

मूल्य 5 रुपये + डाक खर्च 1 रु

अन्य भाषाओं में
अंग्रेजी एवं तमिल में प्रकाशित हो चुकी है
मराठी में अनुवाद हो चुका है

मुख-पृष्ठ पर अंकित छवि
साभार http://members.aol.com/aghoshpub/

मुद्रण
देवेन्द्र वारंग, आइडियल प्रेस, अम्बावाडी, दहिसर पूर्व, मुम्बई 400 068
फोन 0-98920-754316

वन्दना त्रयी

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।
(प्रथम पूजा के अधिकारी, एवं ज्ञान के देवता श्री गणेश की स्तुति में)

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला
या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा
या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर्
देवैस्सदा वंदिता
सा माम् पातु सरस्वती भगवती
निश्शेषजाड्यापहा।।
(कला एवं विद्या की देवी माँ सरस्वती की स्तुति में)

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुस्साक्षात परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।।
(गुरुओं के गुरू, अंतिम गुरू, ब्रह्मा-विष्णु-महेश की स्तुति में)

देवी वन्दना

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।
(आदि शक्ति माँ दुर्गा की स्तुति में)

समर्पण

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैवा,
बुध्यात्मना वा प्रकृते स्वभावात।
करोमि यद्यद् सकलं परस्मै,
नारायणायेति समर्पयामि।।
(यह कृति श्री नारायण के चरणों में समर्पित)

उद्देश्य

यह कार्य, मैं धन या नाम कमाने के लिए नहीं, बल्कि हिंदुओं तक उन सच्चाइयों को पहुँचाने के लिए कर रहा हूँ जिनसे उन्हें जानबूझ कर दूर रखा गया है। जब उन्हें सिक्के का दूसरा पहलू नज़र आयेगा तब वे स्वयं ही निर्णय कर सकेंगे कि उन्हें क्या करना चाहिए। चूँकि मेरा उद्देश्य आपको उस दूसरे पहलू से परिचित कराना है अतः आप मेरा ध्यान उसी पहलू पर केन्द्रित पायेंगे। मेरी चेष्टा केवल इतनी ही होगी कि आपको वह दृष्टि भेंट कर सकूँ जिसके सहारे आपकी नज़र धुंध को भेद कर उसके परे देख सके।

मैं जो कुछ भी लिखता हूँ उसका एक ही उद्देश्य है- एक 'आम हिंदू' को उन खतरों से सावधान करना जो उसके सर पर मंडरा तो रहे हैं, पर उसे उनकी गंभीरता का अनुमान नहीं है। पिछली छः पीढ़ियों से कुछ ऐसी 'ताकतें' चुपचाप परदे के पीछे काम करती रही हैं जिनका एक मात्र उद्देश्य रहा है हिंदू धर्म, हिंदू संस्कृति, हिंदू जीवन मूल्यों एवं हिंदू जीवन प्रणाली को जड़ से उखाड़ फेंकना। इस चेष्टा में वे काफी हद तक सफल भी हो चुके हैं। जैसे कोयले की इंजन पहले छुक-छुक करते हुए चलती है और फिर धीरे-धीरे तेज रफ्तार पकड़ लेती है, उसी प्रकार इस प्रक्रिया ने भी अब अपनी जड़ें काफी गहराई तक जमा ली हैं। आज तो उनकी पकड़ बहुत मज़बूत हो चुकी है, सत्ता, धन एवं मीडिया की सहायता से। अमेरिका, कैनेडा एवं योरप के कुछ देशों से जो बेशुमार धन कानूनी और गैरकानूनी जरियों से हमारे देश में आता रहा है वह आग में घी का काम करता रहा है। अरब देशों से जो असीमित धन गैरकानूनी रास्तों से हमारे देश में पहुँचता रहा है उसने सत्ता में राजनयिकों, एवं मीडिया में नीति-निर्धारकों, पर अपनी पकड़ इतनी मज़बूत कर ली है कि आज मीडिया उन खबरों को बड़ी आसानी से दबा जाती है जो उनके 'असली आकाओं' के हक में नहीं होती, और दूसरी तरफ ऐसे खबरों को खूब उछालती है जिनसे उनके मकसद को बल मिलता है। और इस छल को ढाँकने के लिए उनकी चाकरी में होते हैं बेशकीमती धुरंधर जिन्हें आज का समाज बड़े आदर से "प्रोफेश्नल" की संज्ञा देता है। उनका कार्य होता है मिलीजुली खबरों का एक ऐसा नुसखा तैयार करना जो एक ऐसी छतरी का काम करे जिसे भेद कर 'आम हिंदू' की नजर उस छतरी की आड़ में क्या है उस पर न पड़े।

आगे बढ़ने से पहले मैं आपको बता देना चाहूँगा कि न तो मैं किसी राजनीतिक दल का, न किसी सामाजिक संगठन का, और न ही किसी धार्मिक पंथ का सदस्य हूँ, एवं इस कार्य से मुझे किसी भी तरह की किसी भी व्यक्तिगत लाभ की आशा नहीं है। अब यह आपकी मर्जी आप मेरी सुनें या न सुनें।

मानव जीवन में धर्म का स्थान

अतीत में जायें तो हम देखेंगे कि मानव जीवन पर सबसे गहरा प्रभाव सदा से धर्म का ही रहा है। आज भी यही स्थिति है और कल भी यही रहेगी।

मानव जीवन पर धर्म के प्रभाव को हटाने अथवा मानव जीवन को धर्म के प्रभाव से दूर रखने के लिए अनेक प्रयोग किए गए नास्तिकों द्वारा। इस प्रकार की सोच का प्रतिपादन करने वाले अपने आपको नास्तिक घोषित करने से बचते रहे क्योंकि उन्हें यह डर लगा रहता था कि समाज उनका तिरस्कार कर सकता है - वह समाज जो धर्म के आधार पर खड़ा हो। वे अपने नास्तिक होने की सच्चाई को छुपाते रहे, अपने आपको दार्शनिक, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, विकासवादी (डार्विन की परिकल्पना), साम्यवादी (मार्क्स की परिकल्पना), इत्यादि की संज्ञा देकर। *उनमें से अधिकांशतः व्यक्ति आते रहे समाज के उस वर्ग से जो अपने आपको बुद्धिजीवी कहता है - जिन्होंने अपनी "छोटी-सी" बुद्धि पर इतना बड़ा बोझ डाल दिया कि अन्त में उनकी बुद्धि जवाब दे गई - इस विषय पर कि ईश्वर का अस्तित्व है कि नही।*

साधारण जनमानव को अपनी प्रतिभा से प्रभावित करने की बुद्धिजीवियों में एक जन्मजात प्रवृत्ति हुआ करती है। छपे हुए साहित्य पर उनका वर्चस्व होता है। अब तो उन्होंने इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर भी अपना वर्चस्व कायम कर लिया है। *पर उनकी सोच में एक मूढ़ता है। मानव में, अपनी जड़ों से अपना सम्पर्क स्थापित करने की, जो मूल प्रवृत्ति होती है, उसे वे अनदेखा करना चाहते हैं। इस कारण, यद्यपि उनकी प्रस्तुति प्रभावशाली होती है, इसके बावजूद वे अपने इस "छोटे से" शिविर में जन समुदाय के विशाल समूह को नहीं ला पाते। हाँ, यह अवश्य है कि उनका आधा-अधूरा ज्ञान बड़ी मात्रा में भ्रान्तियाँ पैदा कर देता है, एवं जन समुदाय को भ्रष्ट कर देता है।*

अतः यही बुद्धिमानी होगी कि हम धर्म को समझने की सच्ची चेष्टा करें। आजकल यह देखने में आता है कि बड़ी मात्रा में लोग धर्म की शिक्षा एवं प्रवचन को अपनी जीविका माध्यम बनाये हुए हैं। इससे निहित स्वार्थों की उत्पत्ति होती है। इसका परिणाम यह होता है कि धर्म की छवि विकृत हो जाती है। अब समय आ गया है कि हम इन प्रवचकों का, अंध श्रद्धा के साथ, अनुसरण करना बंद करें। हमें अपने धड़ के ऊपर एक सर दिया है और यह आशा की जाती है कि हम उसका प्रयोग करें। कोई कारण नहीं कि हम इसे पेशेवरों के पास गिरवी रख दें।

गाँधी के तीन बन्दर एवं हम हिन्दू

वे केवल अपने अंदर की बुराइयों को नष्ट करने की बात कहते रहे। अपने चहुँ ओर व्याप्त बुराइयों पर नजर डालने से सदा इंकार करते रहे। वे अपनी आँखों को बंद कर लेना पसंद करते ताकि देखने की आवश्यकता न रह जाये। इस विचारधारा को बल देने के लिए गाँधी ने भी यही किया, अपने तीन बंदरों के प्रतीक को बड़ी महत्ता देकर - एक बुरा न देखेगा, दूसरा बुरा न सुनेगा, तीसरा बुरा न कहेगा। उन तीनों ने एक-एक कर अपनी आँखें, अपने कान, अपनी जुबान बंद कर ली।

इस प्रतीक में तीन बंदर थे। पर जब बात मानव पर आई तो उसने सोचा कि हमें बंदरों से भी आगे बढ़ जाना चाहिए। अतः उन्होंने निर्णय किया कि क्यों न हम ऑल-इन-वन बन जायें। उन्होंने अपनी आँखे बंद कर लीं, अपने कानों को ढक लिया और अपनी जुबान को सी दिया। इस प्रकार उन्होंने अच्छे और बुरे के बीच के फ़रक को पहचानने की योग्यता भी खो दी। इसे माना गया एक महत्वपूर्ण उन्नति - वानर के अस्तित्व से ऊपर उठकर - मानव तत्व की ओर विकास के रूप में। इस प्रकार बना दिया उन्होंने धार्मिक व्यक्ति को पूर्णतः शस्त्र-विहीन एवं अधार्मिक व्यक्ति को अधिपति इस धरती का - जहाँ तक उसकी दृष्टि जाती - कितनी बड़ी उपलब्धि थी यह, और कितनी सुन्दर दार्शनिकता! (आगे पढ़ें पुस्तक-20 धरती माता का .....)

एक दिन आयेगा जब हिन्दू को उस अप्रिय सत्य का सामना करना होगा

हिंदू बच्चा अपने विद्यालय के शिक्षक पर विश्वास करता है। शिक्षक कहता है - सभी धर्म समान हैं। हिंदू बच्चा एक दिन बड़ा होता है एवं प्रौढ़ बन जाता है और तब अपने इस विश्वास को अपने बच्चों के लिए विरासत में छोड़ जाता है। हिंदू इसके आगे नहीं सोचता। उसकी जिज्ञासा यहीं शांत हो जाती है। वह व्यस्त हो जाता है अपने परिवार के लिए रोटी, कपड़ा, मकान जुटाने में एवं उनके लिए एक सुरक्षित भविष्य की व्यवस्था करने में। *उसे इस बात का अहसास नहीं होता कि एक दिन आयेगा जब उसे - या फिर उसकी संतति को - उस अप्रिय सत्य का सामना करना पड़ेगा जिसे वह अनदेखा कर रहा है। पर तब तक बहुत देर हो चुकी होगी।*

और तब, हम अपने आप को इस जगह पर पायेंगे

> "यदि तुम नहीं लड़ोगे तब, जब तुम्हें विजय मिल सकती है, बिना किसी रक्तपात के - यदि तुम नहीं लड़ोगे तब, जब तुम्हारी विजय सुनिश्चित है एवं बहुत महंगी नहीं - वह घड़ी आयेगी जब तुम्हें लड़ना होगा और सारी परिस्थितियाँ तुम्हारे विरुद्ध होंगी एवं बहुत कम सम्भावना रह जायेगी तुम्हारे जीवित रहने की। इससे भी बदतर स्थिति आ सकती है - जब तुम्हें लड़ना होगा, विजय की आशा के बिना - क्योंकि मर जाना बेहतर है गुलाम बन कर जीने से।" (1)

उपरोक्त बात कही थी एक ऐसे व्यक्ति ने जिसके लिए मेरे मन में कोई श्रद्धा नहीं है, क्योंकि उसके मन में हिंदुओं के प्रति कोई श्रद्धा नहीं थी, यदि था कुछ तो केवल तिरस्कार। मेरा मापदण्ड बहुत सहज है - मेरी श्रद्धा केवल सत्पात्र के लिए, कुपात्र के लिए नहीं। इसके बावजूद मैंने उसकी कही हुई बात आपके सामने रखी क्योंकि मेरा बैर सत्य से नहीं। *उस व्यक्ति ने यह बात कही थी तब जब उसके ''ईसाई राष्ट्र'' का अस्तित्व खतरे में था। यह बात उतनी ही सत्य है आज हिन्दू धर्म के अस्तित्व के संदर्भ में। अभी भी कुछ समय बाकी है - चेतो।*

(1) वैसे यह कोई नई बात नहीं है हिंदुओं के लिए क्योंकि वे कभी युद्ध भूमि में पीठ नहीं दिखाते थे मुस्लिम हमलों के दौरान। आपको, आपके पूर्वजों का गौरवशाली इतिहास पढ़ाया गया नहीं ताकि आप उनपर गर्व करना सीखते। आपको तो मानसिक रूप से गुलाम बनाना था उन्हें, इसलिए अंग्रेजों की शिक्षा पद्धति ने आपको यही सिखाया कि आपके पूर्वज तो बँटे हुए थे, आपस में लड़ते रहे और गुलाम बन गये।

क्या तुम्हारी नज़र पड़ी उस नन्हें से बीज पर, जो परिवर्तित हो गया एक विशाल वृक्ष के रूप में, और अब उसने जोखिम में डाल दिया है, उस विराट प्रासाद के अस्तित्व को

क्या आपने देखा है एक नन्हें से बीज को, जो उपजाऊ जमीन, खाद, पानी पाकर, समय के साथ, एक प्रकाण्ड वृक्ष बन गया। क्या आपने देखा उस वृक्ष को - जो खड़ा था एक विराट शक्तिशाली प्रासाद के बहुत निकट - जिसने समय के साथ धीरे-धीरे उसी विराट प्रासाद के नीचे - फैला दी अपनी जड़ें, काफ़ी दूर-दूर तक एवं पर्याप्त गहराई में जाकर - जिसे न देख पाये उसी प्रासाद में रहने वाले लोग।

फिर वह दिन आया जब आपको बताया गया कि उसी प्रासाद की मज़बूत फ़र्श पर दरारें दिखने लगी हैं। जब आप पहुँचे पर्यवेक्षण के लिए तो आपकी नज़र पड़ी उन दरारों पर जो तेजी के साथ चौड़ी होती जा रही थीं और अब बहुत स्पष्ट रूप से दिखने लगी थीं। यह वह समय था जब, सम्भवतः, आपके मानस-पटल पर वह भयावह छवि उभरी कि अब बहुत देर हो चुकी है।

आपके पास अब केवल एक ही रास्ता बचा था। वह यह कि सम्पूर्ण प्रासाद को ढहा देना होगा इसके पहले कि आप उस अवांछित विशाल वृक्ष को जड़ से उखाड़ फ़ेंक सकें। अब आप अपने आप को कितना असहाय पा रहे थे। समय रहते आप अपनी नजरें फेरे रहे उस सच्चाई से जिसे आप देखना नहीं चाहते थे। वह वृक्ष अपनी जड़ें फैलाता रहा आपकी नाक के नीचे और आप आसमान की तरफ देखते रहे।

किसने आपकी आँखों पर पट्टी बाँध रखी है?

बड़ी संख्या में हिन्दू धर्मोपदेशक कहते हैं कि सभी धर्म उसी एक ईश्वर तक ले जाते हैं हम सबको। यह कैसे सम्भव है जब ईश्वर की परिकल्पना ही भिन्न-भिन्न है, अलग-अलग धर्मों की

नज़रों में? कुछ धर्म ईश्वर को देखते हैं एक कसाई के रूप में - जो उन सभी व्यक्तियों का - जो मूर्तिपूजक हैं - सरे आम कत्ल करने का आदेश देता है अपने अनुयायियों को।

क्या हिन्दू धर्म भी ईश्वर को इसी कसाई के रूप में देखता है? कदापि नहीं। तो फ़िर एक कैसे हुए - हिन्दू धर्म का ईश्वर और उन धर्मों का ईश्वर जो मूर्तिपूजक हिन्दुओं का सरे आम कत्ल करने आदेश देता है अपने धर्मावलम्बियों को। ये दोनों विपरीत चरित्र के ईश्वर एक कैसे हुए? वे सभी उपदेशक जो करोड़ों हिन्दुओं को बताते हैं कि सभी धर्मों के ईश्वर एक ही हैं। क्या उन्हें इस बात का एहसास है कि वे हिन्दुओं को कितनी हानि पहुँचा रहे हैं? उन हिन्दुओं को जिन्होंने अपना विश्वास उन्हें अर्पित किया है। [2]

धर्मगुरुओं में से अनेक ऐसे "नहीं" हैं जिनमें अन्य धर्मों के संबंध में पर्याप्त ज्ञान हो, अथवा जिनमें अन्य धर्मों के संबंध में ज्ञान प्राप्त करने की पर्याप्त इच्छा हो। तब उनके अनुयायिओं में वह ज्ञान कहाँ से आयेगा? और जिन धर्मगुरुओं के पास पर्याप्त ज्ञान है - उनमें से अनेक ऐसे नहीं हैं - जिनमें दृढ़ विश्वास एवं सत्साहस हो - सत्य को उजागर करने का। तब उनके अनुयायिओं में वह सत्साहस कहाँ से आयेगा?

[2] पर सभी एक जैसे नहीं हैं। कु छ ऐसे भी हैं जो इन सबसे भिन्न हैं। वे अपने शिष्यों को उतना सत्य तो बताते हैं जिसकी उन्हें जानकारी होती है। पर ऐसे धर्मगुरु तुलना में बहुत कम हैं। अनेक बड़े-बड़े नामी गुरु ऐसे भी हैं जो सत्य को जानते हुए भी असत्य को बढ़ावा देते हैं जो उनके हित में होता है।

यहूदी धर्म

इसके पहले कि आप अन्य धर्मों के विषय में जानें, यहूदी धर्म को समझना इतना आवश्यक क्यों है?

ईसाई बाइबिल का प्रथम खण्ड ओल्ड टेस्टामेन्ट यहूदी मूल का है। थोड़े समय के लिए इसे एक **"बीज"** के रूप में कल्पना करें। जैसे-जैसे आप आगे बढ़ेंगे, आप देखेंगे कि *इस बीज ने एक अनोखी प्रक्रिया को जन्म दिया जो है - पृथ्वी पर वर्तमान समस्त संस्कृतियों का समूल नाश कर दो।* खण्ड 2, 3, एवं 4 को पढ़ने के पश्चात आपको यह बात स्पष्ट नजर आने लगेगी।

आगे बढ़ने से पहले, आइये, हम आपको कुछ परिभाषाओं से परिचित करायें

"ओल्ड टेस्टामेन्ट - ईसाई बाइबिल का प्रथम खण्ड"

"यहूदी धर्म - यहूदियों का एकेश्वरवादी धर्म - इसके उद्भव के लिए यहूदी धर्म देखता है इन धर्मग्रंथों की ओर (1) बाइबिल में लिपिबद्ध - ईश्वर की अब्राहम से की गई प्रतिज्ञा एवं (2) तोराह में लिपिबद्ध, ईश्वर द्वारा मोज़ेज़ (मूसा) को व्यक्त किए गए ईश्वरीय कानून"

"अब्राहम - (बाइबल में) - यहूदियों में मानव जाति का पिता जिसके वंशज हैं सभी यहूदी (अध्याय जेनेसिस 11:27 से 25:10 तक)"

"तोराह (उच्चारण टॉर्-अ) - ईश्वर का कानून - जैसा कि ईश्वर ने व्यक्त किया मोज़ेज़ को - एवं इसे लिपिबद्ध किया गया हिब्रू धर्मग्रंथों के प्रथम पाँच पुस्तकों में (द पेन्टाट्यू)"

"पेन्टाट्यू - ओल्ड टेस्टामेन्ट की प्रथम पाँच पुस्तकें (जेनेसिस, एक्सोडस, लेविइकस, नम्बर्स एवं डिउटेरॉनॉमी) - पेन्टाट्यू का यहूदी नाम तोराह (लिखते तोराह उच्चारण टॉर्-अ)"

ऑक्सफ़ोर्ड शब्दकोश पृष्ठ 1291, 988, 5, 1955, 1374

इन परिभाषाओं से हम क्या जान पाते हैं?

1) "ईसाई बाइबिल" का प्रथम खण्ड है ओल्ड टेस्टामेन्ट

2) यहूदी इन धर्म ग्रन्थों को मानते हैं (अ) बाइबिल एवं उसमें दी गई "ईश्वर की अब्राहम से की गई" प्रतिज्ञा (ब) तोराह एवं उसमें दर्ज की गई "ईश्वर द्वारा मोज़ेज़ (मूसा) को व्यक्त किए गए" ईश्वरीय कानून

3) अब्राहम का स्थान यहूदियों में वही है जो मनु का स्थान हिंदुओं में है

4) हिब्रू धर्मग्रंथों के प्रथम पाँच पुस्तकों में यहूदियों के ईश्वर के कानून दर्ज हैं जिन्हें तोराह (उच्चारण टॉर्-अ) या पेन्टाट्यू कहा जाता है

5) बाइबिल के प्रथम पाँच पुस्तकों (जेनेसिस, एक्सोडस, लेविइकस, नम्बर्स एवं डिउटेरॉनॉमी) को भी पेन्टाट्यू या तोराह कहा जाता है।

6) अर्थात यहूदियों के ईश्वरीय कानून को जानने के लिए ईसाई बाइबिल ही पर्याप्त है।

यहूदी धर्म के ईश्वर के वे कानून जो अन्य धर्मों के अस्तित्व पर सीधा चोट करते हैं

1) पूरी तरह से नष्ट कर दो उन राष्ट्रों को - जो किसी भी अन्य ईश्वर की पूजा करते हों - जब उन पर तुम अपना अधिकार करो ।

2) पूरी तरह से पराजित कर दो उनके देवताओं को, तोड़ डालो उनकी सभी मूर्तियाँ।

3) नष्ट कर दो हर उस चीज को जो उनके देवताओं के पूजा की विधि से जुड़े हों।

4) उनके देवताओं के मूर्तियों को नष्ट कर दो और उस स्थान से उनके देवताओं के नाम और निशान तक मिटा दो।

5) हिंसक भाव से कत्ल कर डालो उनके बच्चों को - उन्हीं की आँखों के सामने - उजाड़ डालो उनके घरों को - और बलात्कार करो उनकी पत्नियों का।

6) उनके प्रत्येक नन्हें बालक का कत्ल कर डालो - उनकी स्त्रियों को मार डालो - पर उनकी कुमारियों को अपने लिए जीवित रखो।

7) माँ का दूध पीते बच्चों को न छोड़ो और सफ़ेद बाल वाले बूढ़ों को भी न बख्शो।

8) पालन करते रहो इन नियमों का - जब तक तुम जीयो इस धरती पर - कभी भी मत भूलो इन्हें।

यहूदी धर्म किस ईश्वर तक पहुँचाने का रास्ता दिखाता है? क्या उसी रास्ते से हम हिन्दू धर्म के ईश्वर तक भी पहुँच सकते हैं?

"तुम पूरी तरह विनाश कर दोगे उन सभी स्थानों का जिन पर तुमने अधिकार किया, यदि वहाँ के लोग किसी भी अन्य भगवान की पूजा करते हों, चाहे वे ऊँचे पर्वतों पर बसते हों, या पहाड़ियों पर, या फिर हरी-भरी वादियों में।"

पवित्र बाइबिल - ओल्ड टेस्टामेंट - डिउटेरॉनॉमी 12:2

"डिउटेरॉनॉमी, बाइबिल की पाँचवी पुस्तक"

ऑक्सफ़ोर्ड डिक्शनरी पृष्ठ 504

"तुम दूसरों के गॉड (ईश्वर) के सामने न तो झुकोगे और न उनकी सेवा करोगे, बल्कि उन्हें पूरी तरह से विध्वंश कर दोगे, उनकी मूर्तियों को तोड़-फ़ोड़ कर नष्ट कर दोगे।"

पवित्र बाइबिल - ओल्ड टेस्टामेंट - एक्सोडस 23:24

"एक्सोडस - बाइबिल की दूसरी पुस्तक"

ऑक्सफ़ोर्ड डिक्शनरी पृष्ठ 645

यहाँ हमारे सामने है एक ईश्वर, जो कहता है कि - घृणा करो अन्य धर्मों से। तो फिर, किस आधार पर हमारे शिक्षक एवं धर्म प्रचारक कहते हैं कि सभी धर्म एक ही ईश्वर की ओर जाने का रास्ता दिखाते हैं?

"तुम उनकी पूजा की वेदियों को ध्वंश कर दोगे, उनकी मूर्तियों को तोड़ दोगे, उनके उपवनों को काट डालोगे।"

पवित्र बाइबिल - ओल्ड टेस्टामेंट - एक्सोडस 34:13

यह ईश्वर अपने अनुयायियों से कह रहा है कि उन संस्कृतियों का विनाश कर दो जो मेरी पूजा नहीं करते।

"और तुम उनके पूजा की वेदियों को विध्वंश कर दोगे, उनके पूजा के स्तम्भों को तोड़ दोगे, उनके उपवनों को जला दोगे, उनके देवी-देवताओं के अंकित चित्रों को चीर डालोगे, गढ़ी हुई मूर्तियों को काट डालोगे, उनका नाम तक वहाँ से मिटा डालोगे।"

पवित्र बाइबिल - ओल्ड टेस्टामेंट - डिउटेरॉनॉमी 12:3

"कोई धर्म हमें नहीं सिखाता कि हम दूसरों से बैर करें" - यही न सिखाते रहे हमारे शिक्षक हमें बचपन से? क्या उन्होंने हमें सत्य का पाठ पढ़ाया, या फिर मिथ्या का? कैसे आप सत्यप्रिय बन सकते हैं, इस समाज के प्रति, जिसने आपको पाल-पोस कर बड़ा किया "मिथ्या" के आधार पर?

"उनकी आँखों के सामने उनके बच्चों को पूरी शक्ति के साथ उठा कर पटको ताकि उनके टुकड़े-टुकड़े हो जायें, और उनकी पत्नियों का बलात्कार करो।"

पवित्र बाइबिल - ओल्ड टेस्टामेंट - ईसाइयाह 13:16

"ईसाइयाह[1] - एक बड़ा महत्वपूर्ण हिब्रू (यहूदी) पैगम्बर था"

"ईसाइयाह - बाइबिल की एक पुस्तक जिसमें लिपिबद्ध हैं उसकी भविष्यवाणियाँ"

ऑक्सफ़ोर्ड डिक्शनरी पृष्ठ 966

[1]"ईसाइयाह" जैसों की शिक्षाओं के आधार पर उनके अनुयायिओं ने गोवा के ब्राह्मणों के साथ जो आचरण किया दो सौ वर्षों तक - क्या "ईसाई" शब्द उसी पर आधारित तो नहीं?

तैयार रहें अपना बलात्कार कराने यदि उनकी शक्ति इतनी बढ़े कि हम उसका प्रतिरोध करने के काबिल न रहें। क्या हमारा हिन्दू धर्म भी हमें यही सिखाता है? किस आधार पर हमारे शिक्षक, बुद्धिजीवी एवं धर्म प्रचारक इस बात का दावा करते रहे कि सभी धर्म एक समान हैं? क्या वे सत्य से अनभिज्ञ थे? यदि हाँ, तो उनका पहला कर्तव्य क्या था? क्या यह नही कि पहले वे स्वयं शिक्षित हो जाते और फिर दूसरों को शिक्षा देते?

जब हिन्दू को यह बताया जाता है कि सभी धर्म एक समान हैं तो वह सभी धर्मों को एक दृष्टि से देखता है। दूसरे धर्म, जो हिन्दू धर्म को धीरे-धीरे मिटा देने के लिए सदा से कार्यरत रहे हैं, उनकी तरफ से, अपनी ओर बढ़ रहे, खतरे से वह पूरी तरह अनभिज्ञ रहता है।

"बच्चों में प्रत्येक नर का कत्ल कर डालो और प्रत्येक उस स्त्री का भी जिसने किसी पुरुष के साथ सहवास किया हो - पर उन सभी मादा बच्चों को जिन्होंने किसी पुरुष के साथ सहवास न किया हो, उन्हें अपने लिए जीवित रखो।"

पवित्र बाइबिल - ओल्ड टेस्टामेंट - नम्बर्स 31:17 एवं 31:18

"नम्बर्स - बाइबिल की चौथी पुस्तक"

ऑक्सफ़ोर्ड डिक्शनरी पृष्ठ 1272

कितनी सुन्दर शिक्षायें हैं - और हमारे धर्म प्रचारकों की ओर देखो - वे कितने उत्साह के साथ इस धर्म को हिन्दू धर्म के समान बताते हैं। क्या ये अज्ञानी शिक्षक, बुद्धिजीवी एवं धर्मोपदेशक हिन्दू जन समुदाय को प्रबुद्ध नागरिक बना सकते हैं? पिछले छः पीढ़ियों से ईसाई-अँग्रेज़ी-मिशनरी शिक्षा-पद्धति एक नई दिशा देती रही है - हमारी सोच, हमारी समझ, हमारी भावनाओं, हमारे जीवन मूल्यों एवं हमारी मर्यादाओं को। जैसे एक कुम्हार कच्ची माटी को मनचाहा स्वरूप देता है, उसी प्रकार यह ईसाई-अँग्रेज़ी शिक्षा हमें अपने ही साँचे में ढालती रही है। और भूलिए मत कि हमारे ये नेता, ये शिक्षक, ये बुद्धिजीवी, ये दिग्दर्शक, ये धर्मोपदेशक, ये सभी इसी ईसाई-अँग्रेज़ी शिक्षा की पैदावार हैं।

इस ईसाई-अँग्रेज़ी शिक्षा ने छः पीढियों तक हम पर कड़ी मेहनत की। हमारी इतिहास की पुस्तकों को बदल डाला। अनेक हजारों वर्षों के दौरान संचित किये हुए हमारे ज्ञान, हमारी शिक्षा-पद्धति, हमारे ज्ञान के भंडार पुस्तकों को नष्ट कर दिया है, और हमें पढ़ाया है कि उन्हें मुसलमानों ने नष्ट किया, जो अपने-आप में सत्य तो था, पर केवल अर्ध-सत्य। मुसलमान केवल उन्हें भौतिक स्तर पर नष्ट कर पाये, फिर भी हमारा ज्ञान जीवित रहा गुरु-परम्परा के द्वारा। ईसाई-अंग्रेज़ों ने हमारी जड़ों को सड़ा दिया, हमें हमारी जड़ों से काट दिया और हमें यह पाठ पढ़ाया कि उन्होंने हमें शिक्षित बनाया।

इस ईसाई-अंग्रेज़ी शिक्षा-पद्धति ने हमें इस हद तक पथ-भ्रष्ट कर दिया है कि अब हम में सुधार की सम्भावना बहुत कम बची है। हम में से जिन्हें अपना अहं अधिक प्यारा है वे तो कभी न बदलेंगे, इतना निश्चित जान लें। पर जिन्हें इस बात की अनुभूति हो जाती है कि वे शिकार बने थे (पढ़ें पुस्तक-7) - एक गहरे एवं बड़े सोचे-समझे हुए सुनियोजित षड़यंत्र के - वे अपनी सोच में, अपने जीवन के लक्ष्यों में, अपने कार्यक्रम में, अपनी चेष्टाओं में आवश्यक परिवर्तन ला सकेंगे।

अपने आपको को हिन्दुत्व-वादी मानने वाले अनेक व्यक्तियों को इस बात का एहसास तो है कि इन विधर्मियों (आसुरिक कहना अधिक उचित जान पड़ता है) का हमारे धर्म पर कितना बुरा असर पड़ता रहा है, एवं वे बड़ी लगन के साथ वह सब कुछ करने की चेष्टा करते रहे हैं जो उनसे मोटे तौर बन पड़ता रहा है। पर उन्हें भी बहुत सारी सच्चाइयाँ जाननी बाकी हैं क्योंकि उनके सामने वे सत्य उपलब्ध नहीं थे। जब उन्हें उन सत्यों का ज्ञान होगा तब उनकी सोच में भी काया पलट की विशेष सम्भावना है। तब उनमें से कुछ जी-तोड़ कोशिश में लग जायेंगे सनातन धर्म की रक्षा हेतु। तब उनके समक्ष और कुछ भी महत्वपूर्ण नहीं रह जायेगा। उनका एक मात्र लक्ष्य हो जायेगा - सनातन धर्म की रक्षा - और, वे लगा देंगे सब कुछ उनका दाँव पर केवल इस उद्देश्य के प्रति।

"उन्हें भूख से तड़पाओ और जलती हुई आग की लपटों को निगल जाने दो उनके शरीरों को, उनकी मौत अत्यंत दुःखद हो, मैं भी भेजूँगा जानवरों को जिनके दाँत उनके शरीरों पर गड़ेंगे और साँपों को जिनका विष उन्हें धूल चटाएगा - बिना तलवार के उनके दिलों में आतंक भर दो, नष्ट कर दो जवाँ मर्दों को, कुमारियों को, माँ का दूध पीते नन्हे बच्चों को, और वृद्धों को जिनके बाल पक चुके हों।"

पवित्र बाइबिल - ओल्ड टेस्टामेंट - डिउटेरॉनॉमी 32:24 एवं 32:25

क्या फ़र्क पड़ता है यदि वह सिर्फ़ एक दुध-मुहाँ बच्चा हो जो माँ के स्तन से लिपटा अपनी भूख मिटा रहा हो, या फिर वह एक जर्जर बूढ़ा हो जिसका एक पैर कब्र में हो - वह हममें से एक नहीं - अतः उसका कत्ल कर डालो।

मूल तथ्य - "तुम हम में से एक नहीं हो"

हे शिक्षकों, बुद्धिजीवीयों एवं धर्मोपदेशकों! क्या आपको अभी तक उनका संदेश नहीं मिला? संदेश बहुत ही स्पष्ट है - "तुम हम में से एक नहीं हो''। इसके बावजूद आप में से जाने कितने हैं जो यही कहते रहना पसन्द करते हैं कि यह धर्म भी हमें उसी ईश्वर तक पहुँचायेगा, जिस तक पहुँचाता है हमारा हिन्दू धर्म। आप क्यों इस सच्चाई को अनदेखा करते रहना चाहते हो कि ये दोनों धर्म, ईश्वर के संदर्भ में - दो अलग-अलग परिकल्पनाओं पर आधारित हैं। एक बातें करता है उस ईश्वर की जिसका हृदय घृणा से भरा हुआ है। दूसरा बातें करता है उस ईश्वर की जिसका हृदय प्रेम से भरा हुआ है।

भोला-भाला हिन्दू जो आप पर विश्वास करता है - उसके साथ आप ऐसा क्यों करते हो? क्या इसलिए कि आपने परख कर देखा है कि यह विधि बड़ी फलदायी है। हिंदू - जो आप पर संदेह नहीं करता है - सोचता है कि आप बड़े महान धर्मोपदेशक हो। वह सोचता है कि आप हमें जीवन के बारे में अच्छी शिक्षाएँ देते हो - हमें प्रेम का पाठ पढ़ाते हो - हम पूरी श्रद्धा से आपका ही अनुकरण करेंगे - स्वीकार करें हमारी यह भेंट जो हम आपको अर्पण करते हैं आपके जीवन-निर्वाह के लिए एवं आपके प्रचार-प्रसार के लिए।

और उस असंदेही हिंदू का क्या होता है? वह सीखता है आपसे, इस बात पर विश्वास करना, कि सभी धर्म समान हैं, एवं सभी धर्म प्रेम करना सिखाते हैं। इस प्रकार से आप उसे बिल्कुल निहत्था कर देते हैं। जितनी सावधानी की कम से कम आवश्यकता है, उसे भी वह ताक पर रख देता है। उधर एक चालाक लोमड़ी इस ताक में बैठी है कि कब उन्हें खा सके, और आप उन्हें सिखाते हैं कि उसका स्वागत कर दोनों हाथ फ़ैला कर, और उसे गले लगा। आपकी सोच कितनी महान है - ईश्वर का निवास सभी जीवों के अन्दर होता है - उस लोमड़ी में भी भगवान हैं, ठीक उसी प्रकार से जैसे तुममें हैं - अतः तू उसे गले लगा।

क्या हम अपने प्रति न्याय करते हैं - जब हम अपने आपको फ़ुसलाते हैं कि हमें उन धर्मों को महिमा प्रदान करनी चाहिए क्योंकि यह हमारी अपनी महानता का द्योतक है। हमें अपने आप से पूछना चाहिए कि क्या यह हमारी महानता की ओर संकेत करता है या फिर हमारी मूर्खता की ओर? ईश्वर ने हमें हमारे कन्धों पर एक मस्तिष्क दिया है और वह हमसे आशा करता है कि हम उसका सदुपयोग करें - अपने हितों की रक्षा के लिए। हमें इतना भोला-भाला भी न होना चाहिए कि हम देखने से इंकार करें, उस समस्या को जो हमारी नज़रों के सामने है।

आपको इस बात की अनुभूति होनी चाहिए कि यदि आप अपनी संतानों को एक ऐसी विचाार-धारा के साथ पाल कर बड़ा करें - जो एक बड़े भारी असत्य के आधार पर खड़ा हो - तो आप उनसे यह नहीं आशा कर सकते हैं कि वे बड़े होकर - अपने प्रति एवं समाज के प्रति - सत्यनिष्ठ होंगे। जब आप उन्हें निहत्था कर देते हैं - उनकी सोच और समझ को एक बड़े असत्य से ढाँक कर - तो मूलतः आप अपने उत्तराधिकारियों के रूप में कापुरुषों एवं पाखण्डियों का एक झुंड तैयार करते हैं। कृपया सच्चाइयों को जानें एवं अपने एवं समाज के प्रति सत्यनिष्ठ बनें। अन्यथा इतिहास आपको कभी क्षमा नहीं करेगा।

हमारे सिवा किसी को भी इस धरती पर जीने का अधिकार नहीं

"उन शहरों को जिनका तुम्हें - तुम्हारे भगवान ने उत्तराधिकारी बनाया - उन शहरों के लोगों में से किसी को भी साँस लेता न छोड़ना - उन्हें पूर्णतया नष्ट कर देना।"

पवित्र बाइबिल - ओल्ड टेस्टामेंट - डिउटेरॉनॉमी 20:16 एवं 20:17

धर्म-परिवर्तन? प्रश्न ही नहीं उठता। उन्हें इस योग्य ही न छोड़ो कि वे जीने के काबिल रह जायें। ऐसा कुछ भी न छोड़ो जो साँस लेता हो। एक हमारे सिवा किसी को यह अधिकार नहीं कि वह इस धरती पर जीये। यही है सोच यहूदी धर्म की। क्या सभी रास्ते एक ही ईश्वर तक ले जाते हैं? क्या वे सभी एक ही ईश्वर की बात कर रहे हैं? बाइबिल के ईश्वर का व्यक्तित्व इतना अलग और भगवद्गीता के ईश्वर का व्यक्तित्व इतना अलग - ऐसा क्यों? क्या हम हिंदुओं के प्रति न्याय कर रहे हैं - उनसे यह कह कर कि अपनी आँखों पर पट्टी बाँध लो, अपने कान ढ़ाँप लो, अपने होठों को सी लो - इस प्रकार उन्हें पूरी तरह निहत्था कर दो ताकि वे आत्मरक्षा तक न कर सकें - केवल अपने अन्दर झाँकते रहें ताकि वे मोक्ष की तरफ धीरे-धीरे बढ़ते रहें।

और यहाँ छुपा है स्थायित्व का बीज

"ये हैं (बाइबिल के) गॉड (ईश्वर) के विधान (कानून) जिनका तुम पालन करोगे तब तक जब तक तुम इस पृथ्वी पर जिओगे।"

पवित्र बाइबिल - ओल्ड टेस्टामेंट - डिउटेरॉनॉमी 12:1

यह है वह ईश्वरीय विधान जो देता है एक स्थायी रूप - इस घृणा की प्रवृत्ति को - एवं इस नष्टकारी मनोविकार को - जब तक यहूदी एवं ईसाई बसेंगे इस धरती पर - क्योंकि वे मानते हैं बाइबिल को एक पवित्र बाइबिल - चाहे कितना भी अपवित्र यह सुनने में लगता होगा आपको। परिस्थितियाँ चाहे बदल जायें, चारों ओर का सम्पूर्ण वातावरण चाहे बदल जाये पर उनकी यह घृणा की प्रवृत्ति एवं विनाश का कार्यक्रम कभी न बदल पायेगा। और इसी बात का साक्षात्कार करेंगे, जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे इन लेखों के साथ। तब से लेकर आज तक वे बदले नहीं मूलतः - यदि कुछ बदला है समय और वातावरण के साथ - तो वह है उनका दिखाव-बनाव। उनके इस मुखौटे को हटा कर हम दिखायेंगे आपको, क्या छुपा है उसके पीछे (पढ़ें पुस्तक-4)। अपनी यात्रा जारी रखें मेरे साथ, यदि आप चाहें तो। मर्ज़ी है आपकी।

प्रश्न उठता है - क्या उनके ईश्वर के ये विधान केवल बाइबिल के पन्नों तक ही सीमित रहे - या फिर उन्होंने इनका अक्षरशः पालन भी किया - अपने आचरणों के द्वारा - और यदि किया तो कब तक करते रहे - किनके साथ - और किस ढंग से?

ईसाइयों ने बड़े ही उत्साह के साथ पालन किया अपने ईश्वर के उन विधानों का। सदियाँ बीत गईं पर वे उन्हें भूले नहीं। उनके वीभत्स कार्यकलापों के शिकार हुए गोवा के हिन्दू ब्राह्मण। यह कार्यक्रम चलता रहा दो सौ वर्षों तक - बिना किसी व्यतिक्रम के - 1560 से 1812 ईस्वी तक। जिस मस्तिष्क से इन कार्यकलापों की उत्पत्ति हुई उस व्यक्ति को आज ईसाई एक संत के रूप में जानते हैं और एक आदर्श के रूप में मानते हैं।

"द एम्पायर ऑफ़ द सोल " में पॉल विलियम रॉबर्टस लिखते हैं - (1) माता-पिता के आँखों के सामने बच्चों को कोड़े लगाए जाते और फिर उनके शरीर के टुकड़े-टुकड़े किए जाते - माता-पिता के पलकों को उखाड़ दिया जाता ताकि वे अपनी आँखों को

बंद न कर सकें - बच्चे छटपटाते रहते - (ईसाई न बनने के दंड स्वरूप) माता-पिता इस वीभत्स दृश्य को अपनी आँखों के सामने देखते रहने के लिए बाध्य किए जाते - बहुत ही सावधानी के साथ माता-पिता के हाथ-पाँव काटे दिये जाते ताकि वे बेहोश न हों और होश में रहते हुए यह सब कुछ देख सकें - केवल उनके पेट से लेकर सर तक का भाग बचा रहता, दोनों हाथ-पाँव कटे होते और पलकें उखाड़ ली गई होतीं (2) पुरुषों के जननेंद्रिय को निकाल लिया जाता और उनके पत्नियों के समक्ष जलाया जाता (3) स्त्रियों के स्तनों को काट दिया जाता एवं उनकी योनि में तलवार घुसेड़ दी जाती - उनके पति इस घृणित कार्य को देखते रहने के लिए बाध्य किये जाते और यह चलता रहा दो सौ वर्षों तक!

लेख संदर्भ - द सेंट बिज़नेस, राजीव श्रीनिवासन, अँग्रेज़ी हिन्दू वॉइस, नवम्बर 2003

वह ईर्ष्यालु ईश्वर जो किसी अन्य ईश्वर को सह नहीं पाता

"तुम किसी भी दूसरे भगवान की सेवा न करोगे क्योंकि लॉर्ड, जिसका नाम ईर्ष्यालु है, वह एक ईर्ष्यालु ग़ॉड हैं।"

पवित्र बाइबिल - ओल्ड टेस्टामेंट - एक्सोडस 34:14

पूछिए अपने आप से - कैसे ऐसा ईश्वर किसी भी व्यक्ति को सहन कर सकता है जो किसी अन्य ईश्वर का पूजक हो? जब आप दूसरों को मूर्ख बनाते हैं तो आप उनकी क्षति करते हैं। पर जब आप अपने-आप को मूर्ख बनाते हैं तो आप अपनी ही क्षति करते हैं। आप में से कुछ यह दलील देना चाहेंगे कि दूसरों को मूर्ख बनाने से अच्छा है स्वयं मूर्ख बने रहना। मैं आपसे यह नहीं कह रहा हूँ कि आप दूसरों को मूर्ख बनायें। मैं आपसे यह कह रहा हूँ कि आप अपने आपको धोखे में न रखें।

कुछ व्यक्ति यह कहना बहुत पसंद करते हैं कि ईश्वर का ज्ञान ही सच्चा ज्ञान है। इसमें मुझे कोई ऐतराज नहीं, पर पहले जमीन पर तो आइये। पहले यह तो जान लीजिए कि क्या सत्य है और क्या असत्य है। उसके बाद सोचिए उस ''सच्चे'' ज्ञान के बारे में। साधारण सत्यों का अज्ञान हमारे लिए अभिशाप बना रहा। अतः पहले धरती पर पाँव रखकर चलिए, फिर चाहे अपने धर्मोपदेशकों के साथ सच्चे ज्ञान के आकाश में उड़िए। आपको चाहिए एक मज़बूत जमीन जिस पर आप चल सकें, और चलते रह सकें। यदि आप ईश्वरीय आनन्द में मत्त होकर - उन सभी के बारे में अपने-आप को भुलाये रखेंगे जो आप के पीठ-पीछे छुरा भोंकने के लिए ताक लगाये बैठे हैं - तो फिर, या तो आपके पास - या फिर आपकी संतानों के पास - वह जमीन भी न होगी जिस पर आप चल सकें।

सम्भव है, आपके मन में ये प्रश्न उठें- यहूदी तो निरीह हैं, जो नाज़ियों द्वारा सताये गये थे। जब हम भारत में बसे यहूदियों की ओर देखते हैं तो उन्हें सर्वदा शांति प्रिय पाते हैं। यहूदियों ने तो कभी भारत पर हमला भी नहीं किया। पर अब तक जो हमने ऊपर पढ़ा वह सब इन धारणाओं से मेल नहीं खाता। ऐसा क्यों? इस पुस्तक के द्वितीय खण्ड में इन प्रश्नों का उत्तर पायेंगे आप।

संदर्भ सूची

ISBN 0-8400-3625-4 [1996] *Holy Bible*, King James Version, Pilot books, Athens, Georgia, Broadman & Holman Publishers, Belgium

ISBN 019-565432-3 [2001] *The New Oxford Dictionary of English*

लेखक परिचय

मैं हिंदू पैदा हुआ - हिंदू हूँ - हिंदू ही मरना चाहूँगा। अपने इष्टदेव श्री सिद्धि विनायक गणपति को मैंने प्रत्येक स्थान पर पाया चाहे वह मंदिर रहा हो, या मस्जिद, या गिरजा। अपने पाकिस्तानी ड्राइवर मलिक के साथ मैं शारजाह के मस्जिद में गया और उसके बगल में बैठ कर अपने इष्टदेव को याद किया, जबकि उसने अपनी नमाज़ पढ़ी। तंज़ानियन-ओमानी हमूद हमदून बिन मुहम्मद के घर पर, उसके परिवार के साथ, एक ही बहुत बड़ी थाली में से, हम सभी ने एक साथ भोजन किया, उनके एक करीबी रिश्तेदार की मौत के बाद, मस्जिद से लौट कर। मुम्बई में एक कैथोलिक चर्च के "मास" के दौरान मैं गिरजे में मौजूद था। कैनेडा के एक प्रोटेस्टेंट चर्च में "सरमन" के समय मैं उपस्थित रहा। मुम्बई में यहूदियों के "सिनगॉग" एवं पारसियों के टेम्पल में मैं गया। कैनेडा में बौद्धों के एक मंदिर में मैंने मेडिटेशन किया। मैने यह सब किया एक हिंदू के रूप में जो यह मानता है कि (1) ईश्वर एक है (2) लोग उसे विभिन्न रूपों में अनुभव करते हैं और (3) प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र है, अपने ढंग से उसे अनुभव करने के लिए। एक हिंदू को यह "नहीं" सिखाया जाता कि केवल मेरा ईश्वर ही "सच्चा" ईश्वर है और बाक़ी सभी के ईश्वर "झूठे" ईश्वर हैं, जैसा कि यहूदियों को सिखाया जाता है, ईसाइयों को सिखाया जाता है, और मुसलमानों को सिखाया जाता है।

धरती के जिस किसी भी कोने में मैं रहा, मैंने सभी धर्मों को एक जैसा जाना, और माना। जाने कितने लोगों को मैंने नौकरी दी, पर कभी यह न सोचा कि वह हिंदू था, या मुसलमान था, या ईसाई था। उन दिनों मेरी सोच धर्मों की भिन्नता की ओर न जाती क्योंकि मैं "अनजान" था। मैं जानता नहीं था कि विभिन्न धर्म क्या सिखाते हैं। मैं एक ऐसी काल्पनिक दुनिया में जीता रहा था जिसमें सभी धर्म "समान" हुआ करते थे। अभी भी मैंने उस कड़वी सच्चाई को न जाना था, क्योंकि मैंने इस बात की आवश्यकता कभी न महसूस की थी कि मुझे "स्वयं" विभिन्न धर्मों का अध्ययन करना चाहिए। एक अज्ञानी के रूप में वस्तुतः मैं बड़ा "सुखी" था, उन ज्ञानियों पर पूर्णतया विश्वास कर जिन्होने मुझे उस "महान असत्य" का पाठ पढ़ाया था कि सभी धर्म "समान" हैं एवं "सभी धर्म प्रेम व शांति की शिक्षा" देते हैं। उन्होंने ऐसा क्यों किया? क्या वे स्वयं अज्ञानी थे, और उसी अज्ञान को, अपने अनुयायियों में बाँटते रहे थे? या फिर सत्य की प्रतीति थी उन्हें, पर किसी निहित स्वार्थ की पूर्ति हेतु वे असत्य को सत्य का रूप देते रहे थे?

जीवन के पचास वर्ष बीत चुके थे, और तब जाकर मैं बैठा, विभिन्न धर्मों की शिक्षाओं का अध्ययन करने। मैंने पाया कि ये शिक्षाएँ बहुत ही स्पष्ट रूप से झलकती हैं, उन धर्मों के अनुयायियों की "सोच" में एवं उनके "आचरण" में। गहराई में गया तो मैंने जाना - किस प्रकार से प्रत्येक धर्म ने, मानव "इतिहास" एवं "वर्तमान" की घटनाओं को रूप दिया। मैंने देखा कि धर्म, इतिहास एवं वर्तमान की घटनाओं के बीच एक गहरा, और सीधा संबंध है। निष्कर्ष बहुत ही स्पष्ट था - हम इन जानकारियों को नज़र अंदाज तो कर सकते हैं, पर अपनी ही क्षति करके। जब तक मैं सत्य से अनजान रहा, तब तक बड़ा "सुखी" रहा। जब सत्य से सामना हुआ तो एक बवंडर उठा मेरी भावनाओं के क्षितिज पर। जब ज्वालामुखी शांत हुआ तब बहुत कुछ पीछे छूट चुका था।

एक ऐसे परिवार में जन्मा था मैं, जहाँ "अध्यात्म एवं उच्च शिक्षा" का प्रचलन अनेक पीढ़ियों से रहा था। मेरे पिता स्वर्णपदक प्राप्त इंजीनियर थे। पितामह डॉक्टर थे। प्रपितामह शिक्षाविद् एवं लेखक थे। पितामह के पितामह, व्यवसाय त्याग कर, अपने जीवन के अंतिम काल में, संसार में रह कर भी, एक योगी बन गए थे। सभी के कुछ-कुछ अंश मुझे मिले। मातृपक्ष के पितामह एक जाने-माने शल्यचिकित्सक थे। माता अपने जमाने की दृष्टि से यथेष्ट शिक्षित थीं। अपने माता-पिता की प्रथम संतान होने के कारण, परंपरा के अनुसार, मेरा जन्म, मातृपक्ष के पितामह के घर, (11 माघ) 25 जनवरी 1952 को बाँकुड़ा (पश्चिम बंगाल) में हुआ था। इस प्रकार मैं एक "हिंदू बंगाली" परिवार में जन्मा, पला और बड़ा हुआ। श्री राम कृष्ण परम हंस देव का अनन्य भक्त भी रहा था मैं।

विश्वविद्यालय की डिग्री एवं भारतवर्ष तथा विदेश से तीन प्रोफ़ेशनल योग्यताओं के आधार पर, मुझे कई देशों के निगमित क्षेत्र में उच्च स्तर पर, व्यापक प्रशासनिक कार्यभार सँभालने का अवसर भी मिला। इस बीच, 20 विभिन्न देशों के व्यक्तियों के साथ निकट संपर्क में कार्य करने का, एवं उन्हें जानने का भी, समुचित अवसर मिला। पचीस वर्षों तक अथक परिश्रम करने के पश्चात, अब मैंने कार्य निवृत्त होकर एकांत वास का आश्रय लिया है। श्री नारायण की दया से मेरे जीवन की "व्यक्तिगत" महत्वाकांक्षाएँ तृप्त

हो चुकी हैं। अब मैं, अपने समय एवं परिश्रम के बदले में, कुछ भी नहीं चाहता। इस कारण, मैं कार्य में पूर्ण मनोयोग के साथ, एकांत ही चाहता हूँ।

मेरा कार्य, केवल उन्हीं लोगों के लिए है जो इसकी महत्ता को पहचानने की योग्यता रखते हैं। मुझमें अब कोई इच्छा नहीं रही कि मैं उन व्यक्तियों को समझाने में अपना समय एवं अपनी ऊर्जा नष्ट करूँ जो मेरी बात को समझने की स्थिति तक अभी नहीं पहुँचे। ऐसे व्यक्ति, इन लेखों की महत्ता को तभी समझेंगे, जब पानी सर तक आ पहुँचेगा एवं डूबने की संभावना उन्हें बहुत ही "निकट" से दिखने लगेगी। फिर भी मुझे अपना दायित्व पूर्ण समर्पण की भावना के साथ निभाते जाना है, एवं उस कर्म को श्री नारायण को अर्पित करते हुए, आगे बढ़ते जाना है। आज यही मेरी "पूजा" है।

पुस्तक सूची

(हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी एव तमिल भाषा मे)

रु 15+1 (संपूर्ण) रु 5+1 (भाग-2) रु 5+1 (भाग-3) राम मंदिर तुम्हें पुकारता

रु 10+1 यदि सत्य का ज्ञान होता आपको - तो शायद आपकी सोच ही बदल जाती

रु 5+1 मज़हब ही सिखाता है आपस में बैर करना - एक सनातनी हिन्दू धर्म के सिवा

रु 5+1 (भाग-1) यहूदी धर्म, ईसाई धर्म, इस्लाम, धर्मनिरपेक्ष, हिन्दू धर्म

रु 5+1 कुरान मुसलमानों को क्या सिखाता है? इसे जानना हिंदुओं के लिए अत्यंत आवश्यक है

रु 20+1 (संपूर्ण) रु 5+1 (भाग-1) वे जो हिंदू देवी-देवताओं के बारे में इतनी गंदी-गंदी बातें कहते हैं

रु 5+1 धरती माता का थोड़ा सा ऋण तो चुकाते जाइये, जाने से पहले

रु 10+1 आतंकवाद का एक अन्य पहलू - राष्ट्र का इस्लामीकरण

रु 5+1 (भाग-1) जर सत्याचे ज्ञान तुम्हांस असते, तर कदाचित तुमचे विचारच बदलून गेले असते

रु 5+1 आपसातील बैरभावाची, मज़हब हीच शिकवण - एका सनातन हिन्दू धर्मा शिवाय

Rs 25+2 Arise Arjun - Awaken my Hindu Nation [Part-1] Journey of Hindu Society

Rs 15+1 Arise Arjun Awaken my Hindu Nation [Part-2] Frauds against Hindu Soc.

Rs 25+2 Ayodhya Shri Raam Mandir - Facts that did not reach you all

Rs 35+2 [Complete] Judaism, Christianity, Islam, Secularism, Hinduism

Rs 5+1 [Part-1] Judaism, Christianity, Islam, Secularism, Hinduism

Rs 25+1 [Complete] *Tamil translation तमिल अनुवाद (संपूर्ण)*

Rs 5+1 [Part-1] New Light on History of BhaaratVarsh

Rs 100+5 [Postal Registration Rs 17] That Unknown Face of Christianity

Rs 10+1 [Part-1] Muslim BhaaratVarsh - expect 'this' to happen to you soon

Rs 5+1 Religions Teach Hatred & Enmity - Sanaatan Dharm does not

Rs 5+1 [Part-1] Christ or Krishn?

अंग्रेजी में अनेक पुस्तकें हैं। उनका नाम यहाँ नहीं दिया गया है कारण वे इस समय स्टॉक में नहीं हैं। समय के साथ उनके अगले संस्करण भी उपलब्ध होंगे।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

पुस्तकें कैसे मंगायें? आप मुझे फोन कर सकते हैं 098698-09012 अथवा ईमेल भेज सकते हैं maanojrakhit@yahoo.com अथवा पत्र लिख सकते हैं 8-604 डिस्कवरी, दत्तपाड़ा मार्ग, बोरीवली पूर्व, मुम्बई 400 066 पर यह बताना न भूलें कि आपको पुस्तक के बारे में जानकारी कैसे मिली।

अन्य पुस्तकों के मूल्य क्या हैं? अन्यत्र पुस्तक सूची दी गई है और साथ ही उनके मूल्य भी। यद्यपि नये संस्करणों के साथ मूल्यों में थोड़ा-बहुत परिवर्तन भी हो सकता है। आप इन आठ में से किसी भी एक साइट पर जा सकते हैं एवं आपको सभी आवश्यक एवं नवीनतम जानकारियाँ वहाँ पर मिल जायेंगी - www.yashodharman.org/.com/.net/.info या www.maanojrakhit.com/.org/.net/.info

क्या मूल्यों में कुछ छूट उपलब्ध है? हाँ, अवश्य, यदि आप एक ही पुस्तक की अनेक प्रतियाँ मंगायें। अनेक व्यक्ति ऐसा करते हैं एवं उन्हें 25 प्रतिशत छूट उपलब्ध हुआ करेगी। यद्यपि पुस्तकें भेजने का खर्च अलग से देय होगा।

भुगतान कैसे करें? पहली बार पुस्तक मंगा रहे हैं तो आपसे अनुरोध है की अग्रिम भुगतान अवश्य करें। पहले भी मंगा चुके हों पर अब अधिक मात्रा में मंगा रहे हैं तो भी अग्रिम भुगतान की व्यवस्था करेंगे तो उचित होगा। किसी भी प्रांत में स्टेट बैंक के किसी भी कम्प्यूटराइज़्ड शाखा में चले जायें एवं निश्चित रकम मानोज रखित के नाम 17 अंकों वाले खाता क्रमांक 00000010416869077 में जमा करवा दें। फिलहाल यह सुविधा निःशुल्क उपलब्ध है। जमा कराते समय बैंक कर्मी से कहें कि रकम के साथ, आपका नाम एवं स्थान कम्प्यूटर में अवश्य दर्ज करें ताकि मुझे जानकारी मिले कि किसने, एवं कहाँ से, कितना धन जमा करवाया है क्योंकि मुझे उसकी रसीद आपको भेजनी होग़ी पुस्तकों के साथ। जमा करने के पश्चात मेरे मोबाइल 098698-09012 पर रकम, नाम, स्थान बता कर एक SMS दे दें ताकि मैं अपने कम्प्यूटर पर चेक कर लूँ कि वह रकम मेरे खाते में जमा हुई है या नहीं। यदि आप चेक भेजना चाहते हैं तो इस बात का ध्यान अवश्य रखें कि वह चेक मुम्बई में at par देय हो अर्थात बैंक उसमें से कुछ रकम काट न लें। चेक की रकम मेरे खाते जमा होने में कई दिन लग सकते हैं। चाहें तो बैंक ड्राफ्ट भेज सकते हैं। चेक लिखते समय या फिर ड्राफ्ट बनवाते समय इस बात का विशेष ध्यान रखें कि मेरे नाम की स्पेलिंग (Maanoj Rakhit) कुछ अलग ही है। यशोधर्मन के नाम से कोई चेक या ड्राफ्ट न भेजें। यदि ड्राफ्ट भेज रहे हों तो कुरियर अथवा रजिस्ट्री द्वारा ही भेजें। मनी ऑर्डर भी भेज सकते हैं परंतु "संदेश" के स्थान पर अपना पूरा नाम, पता, पिन कोड लिखना कभी न भूलें अन्यथा मैं यह न जान पाऊँगा कि किसे, कहाँ पुस्तकें भेजनी हैं। रकम छोटी हो तो पोस्टल ऑर्डर भी भेज सकते हैं।

क्या प्रत्येक नयी पुस्तक छपते ही मुझे डाक द्वारा भेजी जा सकती है? अवश्य, यदि आप 100 रुपये की छोटीसी रकम मेरे पास जमा रखें। जब यह राशि घटते-घटते 25 तक पहुँच जाये तो फिर 75 रुपये का मनीऑर्डर भेज दें। जैसे ही कोई नई पुस्तक छपेगी आपको एक प्रति डाक द्वारा भेज दी जायेगी।

क्या पूरी पुस्तक निःशुल्क पढ़ सकते हैं? जी हाँ, मेरे वेब साइट पर जायें एवं पूरी पुस्तक डाउनलोड कर अपने कम्प्यूटर पर save कर लें। बाद में जब समय मिले तो उसे पढ़ सकते हैं। पर आप उसे छाप नहीं सकेंगे, न ही उसमें कोई परिवर्तन कर सकेंगे। हाँ, चाहें तो ईमेल ऐटैचमेंट के रूप में मित्रों को भेज सकेंगे ।

क्या हम इन पुस्तकों की जेरॉक्स निकलवाकर लोगों में बाँट सकते हैं? अवश्य।

क्या हम इन्हें स्थानीय रूप से छपवा सकते हैं? जी हाँ, मुझसे लेज़र प्रिंट्स मंगवा लें। कुछ नियमों का पालन करना होगा जो मैं आपको लिखित रूप में दूँगा।

क्या हम इनका प्रान्तीय भाषा में रूपान्तर कर छपवा सकते हैं? जी हाँ। कुछ नियमों का पालन करना होगा जो मैं आपको लिखित रूप में दूँगा।

पुस्तक समीक्षा

श्री श्रुतिवन्त दुबे 'विजन'
राष्ट्रपति पदक प्राप्त, राष्ट्रीय सम्मानों से सम्मानित, विद्यावाचस्पति (मा0)
जिला अध्यक्ष इण्डियन प्रेस कौंसिल, जिला सीधी, म प्र, पत्रांक 116 दिनांक 29-7-2006

"मानोज रखित लिखित लघु कृति पढ़ा। प्रभाव वृहद पाया। धर्म की सर्वव्यापकता, सर्व ग्राह्यता, सार्वजनीनता पर विचार करती छोटी पुस्तिका अतीत की खोज वर्तमान पर दस्तक देती व भविष्य को आगाह करती है। धर्म पाखण्ड पर चोट करता लेखक पाखण्डियों को फटकार भी लगाता है। धर्म के वास्तविक स्वरूप को बिना जाने खोखले व अधूरे ज्ञान को बांटते उपदेशकों के खोखले व सपाट चेहरों को उजागर करता है। सच्चाई पूर्वक व भयमुक्त कलम धर्म की व्याख्या में निष्ठावान व आस्थावान है। मैं निरन्तर रखित की पुस्तकों का अध्ययन करता आ रहा हूँ। हर पुस्तक में नवीनता मिलती है। अदम्य साहस, लगन और उत्सह की जीवट यात्रा में अग्रसर कलम मानवीय धर्म की प्रस्तोता है। हिन्दू धर्म में स्वरूपगत व नैतिक गिरावट चिन्ता का विषय है। यही कारण है कि लेखक चिन्तित है तथा धर्म उन्नयन हेतु अपने सन्देश-पत्रों के माध्यम से हिन्दू धर्मावलम्बियों और धार्मिक मठों का आह्वान भी करता है। सभी धर्मों की समानता का मिथ्या प्रलाप करने वाले धर्मपूत स्वतः अज्ञानी हैं तथा अपने उसी अज्ञान को आज तक परोसते आ रहे हैं। यह झूठा सच हिन्दू मूल्यों, हिन्दू ज्ञान व हिन्दू वेष, परिवेष व देश के लिए घातक है। "बड़ी संख्या में हिन्दू धर्मोपदेशक कहते हैं कि सभी धर्म उसी एक ईश्वर तक ले जाते हैं हम सबको।" दूसरी ओर "पर सभी एक जैसे नहीं हैं, मुट्ठीभर धर्मोपदेशक उन सबसे अलग हैं" स्वामी दयानन्द सरस्वती, स्वामी देवानन्द सरस्वती, स्वामिनी प्रमानन्द सरस्वती, स्वामी सिद्धबोधानन्द सरस्वती, महामण्डलेश्वर डॉ स्वामी शिवस्वरूपानन्द सरस्वती, आचार्य श्री अवस्थी, आदि के नाम पुस्तिका में बड़े सम्मान के साथ अंकित हैं। मैं शुद्ध श्रद्धा व भक्ति के साथ नतमस्तक हूँ। ऐसे धर्मगुरुओं का चरण-रज पाने के लिए व्याकुल हूँ। इसलिए नहीं कि चरण-रज मेरे मोक्ष का साधन बने, बल्कि इसलिए कि वह चरण-रज ज्ञान-रज बनकर उन तक पहुँचे जो हिन्दू होकर भी देश के गाँवों मे बहुसंख्या में सुसुप्ति की अवस्था में हैं। 'बड़ी संख्या' वाला धर्मोपदेश ही प्रचारित है अधिक, 'मुट्ठीभर' का उपदेश भले ही सचाई का सौगन्ध खाये, बहुसंख्या तक नहीं पहुँच पा रहा है; मुट्ठीभर तक ही सीमित रह गया है। कितना अच्छा होता- छोटी-छोटी सन्देश पुस्तिकाओं के माध्यम से दूरस्थ हिन्दू समाज मे धर्मसूचना रूप में पहुँचता।

इस नन्ही पुस्तिका के लेखक रखित को मैं उनके दीर्घायु की कामना के साथ धन्यवाद देना चाहूँगा, जिन्होने धर्म व्याख्या प्रस्तुत कर हिन्दू धर्म के उद्धार की दिशा मे अपना कदम उठाया है। बंगाली धरती की कोख के पावन उपज, नारायणी माँ के प्रिय, सम्पूर्ण धर्मों के व्याख्याता रखित से हिन्दू धर्म की अपेक्षायें अभी और हैं। आवश्यकता इस बात की है कि नन्हे धर्म-सन्देश देश के कोने-कोने में, हिन्दू समाज में पहुँचें। मगर अकेले लेखक यह भार नहीं उठा सकता। साधन संसाधन सम्पन्न धर्म संस्थाओं, धार्मिक मठों को चाहिए कि वे आगे आयें व इस पवित्र कार्य में मदद करके हिन्दू धर्म को क्षरण से बचायें। विभिन्न धर्मों के अंधेरे परतों को खोलते हुए सूर्य की प्रतीक्षा करें। सूर्योदय होने पर उजाला तो होगा ही। अंग्रेज गए किन्तु भाषा छोड़कर। 1947 के पहले अंग्रेजों का शासन था। 1947 के बाद अंग्रेजी भाषा का। व्यक्ति का शासन बाहरी धरातल पर होता है, किन्तु भाषा का शासन आन्तरिक धरातल पर। यही कारण है कि हिन्दू संस्कृति को प्रभावित करती अंग्रेजी भाषा हिन्दू नौनिहालों को वयस्क अंग्रेजी बनाती जा रही है। इसे लेखक ने बड़े ही सरल ढंग से व्यक्त किया है - "अंग्रेजी शिक्षा हमे अपने ही सांचे में ढालती जा रही है और भूलिए मत कि हमारे ये नेता, ये शिक्षक, ये बुद्धिजीवी, ये दिग्दर्शक, ये धर्मोपदेशक सभी ईसाई-अंग्रेजी शिक्षा की पैदावार हैं" इन पंक्तियों के प्रस्तुतिकरण मे लेखक का इशारा शासन की ओर भी है। क्या अंग्रेजी शिक्षा पद्धति का बिरबा हिन्दुस्तान की हिन्दू-भूमि पर उर्वरक पाकर अनन्त काल तक लहलहाता रहेगा? संविधान में निर्दिष्ट पन्द्रह वर्ष क्या कभी बीतेंगे? संविधान मे प्रयुक्त किन्तु परन्तु क्या देश हित, समष्टि हित लीलते रहेंगे? यह सवाल है राजनीति से। हालांकि, इन सवालों से राजनीति को लाल मिर्ची भी लग सकती है। कुल मिलाकर व्याख्या शोध आधारित, हिन्दूधर्मसाधक, मानवीय मूल्य रक्षक व हिन्दुत्व बोधक है। कृति संप्रेषनीय, पठनीय व संग्रहणीय है। मेरी मंगल कामनायें कृति व कृतिकार दोनों के लिए।"

श्री श्रुतिवन्त दुबे 'विजन', ग्राम पो0 डगाबरगवाँ, जि0 सीधी, म प्र 486 886, फोन 07805-280062
(यह समीक्षा पुस्तक के प्रथम खण्ड के प्रथम संस्करण पर आधारित है)

ISBN 978-81-89746-**61**-2